

**SHRI NAMBIAR (Tirucherappalli) :** I submit that sometime may be given to discuss the situation brought about by the excesses of the Central police and the military in Calcutta. There is a very serious situation prevailing there. The citizens are not able to live in peace and they are feeling insecure. At least one hour should be allowed to discuss this matter during the next week.

**MR. SPEAKER :** In future, we may not have the Business Advisory Committee then. What is the use of the Business Advisory Committee if all these things are decided here only ?

**SHRI S. M. BANERJEE (Kanpur) :** I was present in the Business Advisory Committee. I know what happened there. I agree with it. My only submission to you is that some time should be found for this. A motion is likely to be tabled on the Delhi situation. I also feel that the police excesses committed in Delhi and in the Banaras University should be discussed. I only want your help in getting another motion admitted on the question of the excesses committed by the Central Reserve police in Calcutta. Some time should be found for that also.

**MR. SPEAKER :** He is only saying what others have already said.

12.57 hrs.

**OFFICIAL LANGUAGES (AMENDMENT) BILL AND RESOLUTION RE : OFFICIAL LANGUAGES—Contd.**

**MR. SPEAKER :** Yesterday some amendments had not come in time because some were misplaced or were late in being given. I said I would extend the time for admission of the amendments by an hour or so. Shri Ranga wishes to move his amendment.

**SHRI RANGA (Srikakulam) :** I move;

“That the Bill be circulated for the purpose of eliciting opinion thereon by the 1st day of the next session”. (157)

I would like to say that if any of us is not in favour of this Bill, we have given to ourselves, the members of the Swatantra Group, freedom to take whatever line they would like at the time of voting according to the dictates of their conscience keeping in view what they consider to be the best interests of the country.

**MR. SPEAKER :** Any other Member who wants to move amendments may intimate to me. Let us fix some time at least now so that Members may not say that they had missed the chance and so on. Up to 2 P.M. they can give amendments, and after that, it is not possible.

Now, Shrimati Sucheta Kripalani may resume her speech.

**SHRIMATI SUCHETA KRIPALANI (Gonda) :** What about the amendments that I gave notice of yesterday ?

**MR. SPEAKER :** They are all there.

**SHRIMATI SUCHETA KRIPALANI :** Will they be taken as moved ?

**MR. SPEAKER :** Up to 2 P.M. even today they can give amendments. I have already said that.

**श्री अटल बिहारी वाजपेयी (बलरामपुर) :** अध्यक्ष महोदय, अभी प्रो० रंगा ने कहा है कि उन्होंने अपनी पार्टी को स्वतन्त्रता दे दी है। मैं आशा करता हूँ कि कांग्रेस पार्टी भी स्वतन्त्रता देगी।

**MR. SPEAKER :** I have no objection.

**श्रीमती सुचेता कृपालानी :** अध्यक्ष महोदय, इस राज भाषा विधेयक के सम्बन्ध में जो कुछ मुझे कहना था, वह मैंने कल कह दिया था, अब मैं केवल एक-दो बातों की ओर सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहती हूँ।

इस विधेयक में कोई अवधि निर्धारित नहीं की गई है कि कब तक अंग्रेजी के बजाय हिन्दी इस देश की राज भाषा बन जायगी। हम लोगों ने पहले 15 साल की अवधि रखी थी और 15 सालों की अवधि में जो प्रगति होनी चाहिये थी, वह नहीं हुई। इस समय कहा जा रहा है कि अगर हम अवधि निर्धारित करेंगे तो दक्षिण के हमारे भाई नापसन्द करेंगे, इस लिये अवधि निर्धारित नहीं की जा रही है। मैं इस समय सरकार से जानना चाहती हूँ कि उनका इरादा क्या है? अगर इस विधेयक के लाने का इरादा यह है कि हम हमारे

अहिन्दी प्रान्तों को हिन्दी सीखने के लिये, हिन्दी में काबलियत हासिल करने के लिये और समय दें, तो इस पर हमें कतई एतराज नहीं है। लेकिन अगर यह इरादा हो कि इस विधेयक के पीछे अंग्रेजी हमेशा चालू रहेगी, तो फिर इस विधेयक के प्रति हमारी बहुत आपत्ति होगी। इस लिये हम लोग, जैसे हमारे दक्षिण के भाई चाहते हैं कि उन पर हिन्दी लादी न जाय, दूसरी तरफ़ हम चाहते हैं कि संविधान ने जो फैसला किया हुआ है कि राजभाषा हिन्दी होगी, तो हम चाहते हैं कि कोई समय मुकर्रर करें कि उस समय तक हिन्दी राजभाषा हो जायगी और सब लोग उसमें काबिल हो जायेंगे। इसके लिये मैंने एक अमेन्ड-मेन्ट दिया है। हमारे प्रधान मंत्री ने कहा था कि उनके सामने कुछ दिक्कतें हैं, उन दिक्कतों को सामने रखते हुए एक बीच का रास्ता निकालने का प्रयत्न किया गया है कि साल के साल इसमें अपना लक्ष्य निर्धारित करें और हर साल मूल्यांकन करें कि हिन्दी की प्रगति लाने के लिये हमने कितना काम किया है और जो चीज करें उसकी रिपोर्ट इस सदन के सामने आ जाय, ताकि सदन परिचित हो जाय कि हमने हिन्दी का कितना प्रसार और प्रमत्ति की है।

दूसरी बात इस विधेयक में प्रावीजन है कि जब तक अहिन्दी भाषी सारे प्रान्त राजी न हों, तब तक अंग्रेजी से हिन्दी में चेन्ज-ओवर न हो। इस पर हमें एतराज है। जैसे हम नहीं चाहते हैं कि उन पर जबरन हिन्दी थोपी जाय, वैसे ही हम यह भी नहीं चाहते कि दूसरी स्टेटों पर अंग्रेजी थोपी जाय। इच्छा तरह से तो जब तक वे न चाहेंगे, हिन्दी आ नहीं सकती और उसकी प्रगति रुक जायगी। इसलिये मैं बड़ी नम्रता से सरकार से अपील करना चाहती हूँ कि वे लोग इस चीज को देखें और इन दोनों समस्याओं की तरफ़ अच्छी तरह से तबज्जह दें, क्योंकि इसके बारे में बहुत लोगों के मन में काफ़ी भावनायें हैं, इस लिये इन दोनों भावनाओं के बीच में एक समन्वय लाने की कोशिश करनी M94LSS/67—8

चाहिये और इस का रास्ता निकालना चाहिये।

अब जो प्रस्ताव है—भाषा के सम्बन्ध में, उसमें हमने कुछ संशोधन दिये हैं, उनके बारे में सविस्तार मैं पीछे बात करूंगी। लेकिन इस समय मैं सरकार से इतना ही कहना चाहती हूँ कि हिन्दी 1965 के बाद से हमारी राज भाषा है, मगर अब जो विधेयक आया है, इस विधेयक के पीछे जो झलक दिखाई पड़ रही है उसमें अंग्रेजी को ऊंचा स्थान देने का प्रयत्न किया है। हमने जितने संशोधन दिये हैं, अगर आप लोग अच्छी तरह से देखेंगे तो हमने केवल इतना ही प्रयास किया है कि हिन्दी को अंग्रेजी के बराबर रखा जाय। हिन्दी को ऊंचा स्थान नहीं दिया जा रहा है, न सही, मगर अंग्रेजी के बराबर का स्थान तो मिले। अगर मैं फिगेरिटिवली आपको बताऊँ—अंग्रेजी मैडम उस ऊंचे सिंहासन पर आसीन हैं, बहुत अच्छी तरह से आसीन हैं, और मजबूती से बैठी हुई हैं, हिन्दी माता दरवाजे के बाहर खड़ी हुई हैं, वह टुकुर-टुकुर ताक रही है, उसको आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं है, हम लोगों ने फैसला किया और उसका हाथ पकड़ कर उसको आगे बढ़ाया, परन्तु आगे बढ़ते-बढ़ते हाथ छूट गया और वह खड़ी हुई है और मैडम उसी तरह से बैठी हुई है। हम यह परिस्थिति नहीं चाहते हैं—हम यह चाहते हैं कि कम से कम उसको बराबरी की कुर्सी तो दें। मैं यह देख रही हूँ कि इस विधेयक में हमको इसी बात की प्रार्थना करनी पड़ रही है कि हिन्दी को कम-से-कम अंग्रेजी के बराबर का स्थान तो दो—इस इन्टैरिम पीरियड में, ताकि हिन्दी की प्रगति कुछ आगे बढ़े।

SHRI HEM BARUA (Mangaldoi) : It always happens. The wife always gets preference over the mother.

श्रीमती सुचेता कृपालानी : अब मैं अपने दक्षिण के भाइयों से प्रार्थना करना चाहती हूँ कि आपके मन में जो भाव है कि हम दबाये जायेंगे, हमारी भाषा प्रगति नहीं पायेगी,

### [श्रीमती सुचेता कृपलानी]

इसलिये अंग्रेजी रखना चाहते हैं, मैं उनसे कहना चाहती हूँ—अगर हिन्दी राज्य भाषा वास्तविक रूप से बने और हिन्दी का व्यवहार हम करें तो जितनी प्रान्तीय भाषायें हैं, वे और ज्यादा विकसित होंगी अगर जब तक हिन्दी भाषा पूरी तरह से आये, उस समय तक हम अंग्रेजी का सहारा ले कर चलेंगे, जैसे एक लंगड़ा व्यक्ति ऋच का सहारा ले कर चलने का प्रयत्न करता है, उसी तरह अंग्रेजी का ऋच लेकर हम सब प्रान्त चलेंगे तो भाषाओं के विकास में देर होगी। इस लिये दक्षिण के भाईयों को जो डर है और वे चाहते हैं कि अंग्रेजी रहे तो इससे उनकी भाषा विकसित नहीं होगी। मैं समझती हूँ कि हमारी भाषाओं की प्रगति तभी होगी जब भारतीय भाषायें और हिन्दी को हम अपनायेंगे और हिन्दी को अपनी भाषा बनायेंगे।

कहा जाता है कि अंग्रेजी जरूरी है, लिंक लैंग्वेज के रूप में दुनिया के साथ सम्बन्ध रखने के लिये। मैं मानती हूँ कि अंग्रेजी जानने से हमें कुछ फायदा है, विदेशों से अपना कारोबार चलाने में मदद मिलती है। मैं बड़े अदब से कहना चाहती हूँ कि अंग्रेजी 200 साल यहां रही है, यह रहने वाली भाषा है और काफ़ी अच्छा स्थान इसका हिन्दुस्तान में रहेगा, लेकिन हम यह कहें कि हम राजभाषा हिन्दी को न बनायें, क्योंकि हमें अंग्रेजी चाहिये—विदेशों के साथ कारोबार के लिये, तो मैं पूछना चाहती हूँ कि दुनिया में बहुत-से अन्य भाषाओं वाले मुल्क हैं, वे क्या दुनिया के साथ, दूसरे मुल्कों के साथ इन्टरनेशनल कामों को नहीं करते हैं? अगर दूसरी भाषाओं के लोग अपनी भाषा में सारे देश का काम चलाकर भी इन्टरनेशनल काम के लिये अंग्रेजी या अन्य कोई भाषा सीख सकते हैं, तो हम भी ऐसा कर सकते हैं। दुनिया में हम अपना स्थान बनाये रखने के लिये जर्मन सीखें, फ्रेन्च सीखें, रशियन सीखें और जो दुनिया की प्रधान भाषायें हैं, उनको सीखें, इसमें किसी को कोई आपत्ति नहीं हो सकती।

अब मैं सदन का ज्यादा समय नहीं लेना चाहती हूँ, एक बात मैं हिन्दी प्रेमियों से भी कहना चाहती हूँ। आज कल एक होड़ लगी हुई है—जो हिन्दी की उपासना करते हैं उन्होंने भाषा को कितना आडम्बरपूर्ण बनाने का प्रयत्न किया है, जिससे वह कठिन होती जा रही है। भाषा तब ही प्रगति कर पायेगी, जब कि वह जनता की भाषा होगी। मैं बंगला के बारे में कह सकती हूँ—जो भाषा बिलकुल क्लिष्ट भाषा थी, मुश्किल थी, साधारण लोग जिसको समझ नहीं पाते थे, उस बंगला भाषा की प्रगति एक नदी की तरह से बढ़ी और वह बहने लगी, जब श्री रविन्द्र नाथ ठाकुर ने अपनी शक्तिशाली लेखनी से इसको जनसाधारण की भाषा बनाया। कितने सुन्दर ढंग से उन्होंने भाषा की प्रगति की, जिसको आज हम समझ सकते हैं, उसका आनन्द ले सकते हैं। इसी तरह से नदी में पड़े हुए पत्थर को जब हम हटा देंगे, तभी नदी गति से बहेगी और उसमें साधारण लोग आकर आचमन, स्नान, पान, सभी कुछ कर सकेंगे। इस लिये भाषा की नदी को हम बहायें, लेकिन यदि हम समझते हैं कि हिन्दी में संस्कृत भर कर उसको आडम्बरपूर्ण बना दें, तो वह जनता की भाषा नहीं बनेगी और न हिन्दुस्तान की राजभाषा बनेगी। हिन्दुस्तान की राजभाषा वही हिन्दी होगी जिसमें कुछ गुजराती लफ्ज होंगे, जिसमें बंगला और मराठी के लफ्ज भी होंगे, तमिल के शब्द भी होंगे। जो भाषा आज यू० पी० में बोली जाती है या बनारस में बोली जाती है या खड़ी बोली है, वह राजभाषा नहीं होगी। जिसमें हम सारे भारत से कुछ न कुछ शब्द लेंगे, यहां तक कि हम उसमें अंग्रेजी से भी कुछ शब्द लेंगे।

अब अगर अंग्रेजी के शब्द जैसे इंजन और स्टेशन से हम सब लोग वाकिफ़ हो गये हैं तो हिन्दी में इंजन और स्टेशन ही चलने चाहिए न कि इंजन के लिए हम वाष्पचालित यंत्र आदि शब्द गढ़ कर चलायें। अंग्रेजी के वह शब्द जो कि हिन्दी में काफ़ी ज़माने से प्रचलित हैं

और सभी लोग उनको बखूबी समझते हैं, उनको हिन्दी में उसी तरह चलने दिया जाय। आखिर 200 साल अंग्रेज हमारे साथ रहे हैं तो उसकी कुछ-न-कुछ छाष तो हमारे ऊपर पड़नी ही चाहिए।

13 hrs.

मैं कहना चाहूँगी कि उर्दू भी हमारी निजी भाषा है और अगर कोई समझे कि हिन्दी का प्रसार उर्दू को दबा कर किया जाना है तो वह भी सही बात नहीं है। उर्दू भारतीय भाषा है, उर्दू का जन्म भारत में हुआ है और उर्दू की प्रगति भी भारत में ही हुई है।

मैं समझती हूँ कि इस सदन के सारे लोग हमारे साथ सहमत होंगे कि आज जो यह देश में तरह-तरह की सेनाएं खड़ी हो रही हैं जैसे कभी शिव सेना, कभी नाग सेना, कभी बानर सेना, हनुमान सेना वा लंगूर सेना या हिन्दी सेना, यह जो देश में इतनी सारी सेनाएं बन रही हैं यह सेनाएं देश को बर्बाद कर देंगी। इस तरह की प्राइवेट सेनाओं से देश का काम नहीं होने वाला है। जरूरत इस बात की है कि हम सब लोग यहां बैठ कर संजीदगी से उसके ऊपर विचार करें। बेशक अगर कोई किसी को भावना व्यक्त करनी हो तो करे, झगड़ा अगर किसी बात को लेकर करना हो तो करे लेकिन उसे संजीदगी और शान्ति से करे और उसका फँसला करे लेकिन इस तरह से यह जो प्राइवेट आर्मीज बना कर देश में खड़ी कर दी गई है जैसे कि फियुडल स्टेट में होता था। हमने देखा कि दूसरे मुल्कों में हरएक शक्ति-शाली व्यक्ति अपनी प्राइवेट आर्मी रखता था और लड़ता था, वैसा करना अनुचित है। इस तरह की प्राइवेट आर्मी बंगाल में पहले थी। वहां के जमींदारों ने लठियालों की आर्मी रख ली थी। उनका काम होता था कि जाकर किसी की गरदन उतारें और अपना काम बनाने के लिए किसी का सिर फोड़ें। आजकल के वातावरण को देखते हुए मुझे लग रहा है कि हम धीरे-धीरे उसी फियुडल स्टेट की हालत में चले जा रहे हैं। एक, एक गिरोह अपने-अपने लठियाल तैयार कर रहा है, प्राइवेट

आर्मीज तैयार कर रहा है। जो फँसला पार्लियामेंट में होना चाहिए, जो फँसला लेजिस्लेचर्स में होना चाहिए वह फँसला सड़कों पर करने का प्रयास है। यह तरीका अपनाना देश को बर्बाद करना है। अगर आप हिन्दी को बर्बाद करना चाहते हैं, हिन्दी की सब से बड़ी कुसेवा करना चाहते हैं उसकी मुखालफत करना चाहते हैं तो बेशक यह तरीका आप ग्रहण करें। लेकिन अगर आप हिन्दी की तरक्की करना चाहते हैं, उसकी सेवा करना चाहते हैं तो यकीन जानिये कि उसके लिए यह तरीका कदापि नहीं है। जबरन कोई भाषा नहीं सीखता है, भाषा लोग प्रेम से सीखते हैं। हिन्दी भाषा का प्रचार और विकास तभी संभव है जबकि हिन्दी में अच्छी-अच्छी सुन्दर पुस्तकें लिखी जायें और यदि ऐसा किया जायगा तो लोग स्वतः हिन्दी की ओर आकर्षित होंगे और हिन्दी बढ़ेगी।

मैं अपनी बात कहना चाहती हूँ कि मैं हिन्दी अच्छी बोल सकती हूँ, समझ सकती हूँ लेकिन मुझे हिन्दी के लिखने पढ़ने की आदत नहीं है और न मैं ने हिन्दी क्रायदे से सीखी ही है। मगर जब मैं जेल में थी तो मैं तुलसीदास जी की रामायण बड़े प्रेम से पढ़ती व सुनती थी क्योंकि उसके पढ़ने और सुनने में बड़ा ही मन को आनन्द व संतोष प्राप्त होता था। एक दफ़ा मैं बिहार में गई हुई थी। विद्यापति की किताब एक मित्र के घर में पाई हालांकि वह मैथिल में थी, रीजनल लंग्वेज में थी तो भी चूँकि वह बहुत सुन्दर पुस्तक थी, उसकी भाषा व शैली भी बहुत सुन्दर थी इसलिए मैं उस किताब को पढ़ने के लिए ले आई। इसलिए मैं अपने हिन्दी प्रेमी भाइयों से निवेदन करना चाहूँगी कि अगर वह चाहते हैं कि अधिक-से-अधिक अहिन्दी भाई हिन्दी पढ़ें तो हिन्दी की अच्छी व सुन्दर पुस्तकें अधिक-से-अधिक मात्रा में निकलवायें और वह देखेंगे कि लोग स्वतः हिन्दी की ओर खिंचे चले जायेंगे।

मैं यह मानती हूँ कि सचमुच में एस० एस० पी० और डा० लोहिया ने हिन्दी के विकास व

### [बीमती सुचेता कृपलानी]

प्रसार के लिए प्रयास किया है, उन्होंने अपनी पार्टी में चाहे वह कार्यकर्ता किसी भी प्रान्त से आया हो उसको हिन्दी सिखाई है। यह बहुत तारीफ़ की बात है। लेकिन मैं आज सब से ज्यादा यादव जी को कहना चाहती हूँ कि आज हिन्दी को बढ़ाने का जो आपने रास्ता निकाला है यह बहुत गलत रास्ता है। इस तरह से जबरदस्ती करके और सीनाञ्जोरी से आप हिन्दी को लाना चाहते हैं तो उस तरह हिन्दी नहीं आने वाली है। इससे अहिन्दी भाषा-भाषी चिढ़ जायेंगे और वह हिन्दी को नहीं अपनायेंगे। इस सम्बन्ध में मैं एक कहानी बतला कर अपनी बात समाप्त करूंगी। एक कांग्रेस के बड़े पुराने मित्र जो कि अपने प्रान्त में मिनिस्टर रह चुके हैं उन्होंने मुझे थोड़े दिन हुए बतलाया कि जब वह पहले-पहल पार्लियामेंट में आये तो उन्होंने मन में यह इरादा किया वह यहां हमेशा कोशिश करके हिन्दी में बोलेंगे। लेकिन हुआ यह कि पहले ही दिन जब वह पार्लियामेंट में आकर बैठे तो पार्लियामेंट के एक कोई सदस्य ने कहीं एक आद्य लफ़्ज़ अंग्रेज़ी में बोल दिया तो इसके लिए पार्लियामेंट में काफी झगड़ा हुआ। जब शाम को कहीं पार्टी थी और वहां उनकी मुलाकात उन लोगों से हुई जिन्होंने कि अंग्रेज़ी में बोल देने पर इतना झगड़ा किया था, वहां पर जब उन्होंने पूछा कि भाई यह तुम लोगों ने ऐसा क्यों किया तो वे उनके पीछे पड़ गये और उलटे वहां उनको लैक्चर देने और उपदेश झाड़ने लग गये। बस, तंग आकर और चिढ़ कर उन्होंने उसी दिन से ऐसा इरादा कर लिया कि वह अब हरगिज हिन्दी में नहीं बोलेंगे।

मैं आप लोगों से हाथ जोड़ कर बिनती करती हूँ कि यदि आप हिन्दी का प्रसार करना चाहते हैं, हिन्दी की सेवा करना चाहते हैं तो आप हिन्दी को सुन्दर बनाइये ताकि लोग खुद आकर हिन्दी सीखें। भाषा ज़बरन किसी के ऊपर आपको लादने की चेष्टा नहीं करनी चाहिए। इसलिए मैं कहूंगी कि हिन्दी की

सेवा आप करिये। हिन्दी का प्रेम से प्रचार करिये, लोगों का मन जीतने की कोशिश करिये। लेकिन यह जो आज आप जबरदस्ती कर रहे हैं, जो सेना लाठियों वाली इधर, उधर घुमा रहे हैं उसको रोकिये। मैं कहना चाहूंगी कि जो भी पार्टी या व्यक्ति आज इस तरह से लड़कों को भड़का कर उनकी सेनाएं बना कर और हाथ में लाठियां देकर घुमा रहे हैं वह देश का अहित कर रहे हैं और हिन्दी की सेवा नहीं, कुसेवा कर रहे हैं। समय रहते वह इससे बाज़ आयें। बस मुझे इतना ही कहना है।

13-06 hrs.

*The Lok Sabha adjourned for Lunch till Fourteen of the Clock.*

*The Lok Sabha then reassembled after lunch at four minutes past Fourteen of the Clock.*

[MR. DEPUTY-SPEAKER in the Chair]

### OFFICIAL LANGUAGES (AMENDMENT) BILL AND RESOLUTION *RE.* OFFICIAL LANGUAGES—*contd.*

MR. DEPUTY-SPEAKER : Shri Amiyannath Bose.

SHRI AMIYANATH BOSE (Arambagh) : Mr. Deputy-Speaker, Sir, the Official Languages Bill and the Resolution that the Home Minister has introduced in this House will be of lasting effect on the future of our country.

Therefore, these are subjects which must be discussed in a dispassionate manner. The atmosphere of passion, the atmosphere of heat that has been generated by a section of Members of this House, I think, is most unfortunate.

I believe, Sir, that two main principles have to be observed in discussing this Bill. The first and the most important principle is that in a country of many languages like ours the language policy should be so framed that it strengthens and does not destroy national unity. The second important principle is that no language can be imposed on people by mere law, and I want to repeat it here. I have practised as a lawyer for

more than 20 years, and purely as a lawyer I want to say that language is not a matter of an article of the Constitution, it is primarily a matter of historical growth. It took years, many many years, for the language of Moliere, of Goethe and of Shakespear to become the national languages of France, Germany and England. It may very well be, and I say so not merely as a Bengali standing in this House but as an Indian that the language of Tagore, the neo-classical language of India, may one day become through pure historical growth the national language of this great country.

But, however, to return to the first principle, I say that there is a genuine fear among non-Hindi-speaking people about this language, the imposition of Hindi on them. It is not a question whether it should be done or not, but that fear is there. I say that that fear is widespread in Bengal. That fear was not there in East Asia. I will give you a historical instance. Sir, you know that most of the members of the Azad Hind Foj and the Azad Hind Movement came from the State from where Professor Ranga comes—the State of Madras. But under the supreme leadership of Netaji Subhas Chandra Bose the Azad Hind Foj, the Azad Hind Government and the Azad Hind Dal accepted Hindusthani language in Roman script as their language. It was done because there was no fear among the Madrasis, the Tamilians and the Bengalis there that language would be used as an instrument of oppression. Today, it must be clearly stated, and I say so as a Bengali, that there is a genuine fear in my State that the language policy may be used and is being used as an instrument of oppression of non-Hindi-speaking people.

SHRI S. M. BANERJEE (Kanpur) : I do not think every Bengali feels like that.

MR. DEPUTY-SPEAKER : You will prove an exception.

SHRI A MIYANATH BOSE : I cannot speak....

SHRI S. M. BANERJEE : Half of the Bengalis feel that they should not have the foreign language. I like Bengali. I like Hindi. But English is a foreign language.

MR. DEPUTY-SPEAKER : You are an exception, I accept it.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : उपाध्यक्ष महोदय, आपको ऐसा रिमार्क नहीं करना चाहिए।

श्री मधु लिमये (मुंगेर) : यह ठीक कह रहे हैं बनर्जी साहब।

SHRI S. M. BANERJEE : Merely because a man comes from Bengal he cannot say that he knows the feelings of Bengal. I know Bengali (*Interruptions*).

SHRI THIRUMALA RAO (Kakinada) : Sir, is it an issue between two Members? When his turn comes Shri Banerjee can say what he wants to say. Now he has not been called upon by the Chair to speak.

SHRI AMIYANATH BOSE : I came to this House—not here, but there in the gallery—as a student, when my revered father, Shri Sarat Chandra Bose was the Leader of the Congress Assembly Party here, when Mr. Mohammad Ali Jinnah was the Leader of the Muslim League I had never found such pandemonium in the House in those days that we find today. (*Interruptions*)

श्री मधु लिमये : वृह गुलाम असेम्बली यी।

SHRI AMIYANATH BOSE : They fought against the British. Certainly, they had as much courage as my friend, Shri Limaye, to fight against British imperialism. My father spent 8 years in prison, British prison.

I say that the three-language formula, in respect of which the Resolution has been placed, if it is sincerely pursued, if we in Bengal really try to learn Hindi, if people in UP try to learn either Bengali or any southern language, if that intercourse takes place as the three-language formula enunciated in the Resolution states, then, I believe time will come when we shall develop that, composite culture that India alone can produce. Before that, in spite of what my esteemed and learned friend Shri S. M. Banerjee has stated, as long as Bengalis do not accept Hindi to be the link language, English must be maintained, and that is all that I am demanding now. (*interruptions*)

SHRI N. S. SHARMA (Domariaganj) : Question.

**SHRI AMIYANATH BOSE :** My good friend of the Jan Sangh does not represent Bengal. Let me remind my esteemed friend of the Jan Sangh what the founder-President of the Jan Sangh had to say in the Constituent Assembly. With your permission, May I read it out ? This is what Dr. Syama Prasad Mookerji, founder-President of the Jan Sangh, stated in the course of Constituent Assembly debates on the 13th of September 1949.

**SHRI ATAL BEHARI VAJPAYEE :** Let me inform my hon. friend that Dr. Mookerji was not the President of the Jan Sangh when he spoke in the Constituent Assembly. Let us put the records straight.

**SHRI AMIYANATH BOSE :** I know that amount of history. Shri Vajpayee corrects me that he was not the President of Jan Sangh then. But Dr. Syamaprasad Mookerji remained Dr. Syamaprasad Mookerji even when he became the President of the Jan Sangh, of which Shri Vajpayee is the leader now.

**SHRI N. S. SHARMA :** Why don't you read what Shri Subhas Chandra Bose has said ?

**SHRI AMIYANATH BOSE :** I know perhaps a little more about Subhas Chandra Bose than my hon. friend.

श्री मधु लिमये : जनसंघ या ही नहीं उस समय ।

**SHRI AMIYANATH BOSE :** This is what Dr. Mookerji said :

"We will have to decide realistically whether for certain special purposes English should still be continued to be used in India. As some of my friends have already stated, we might have rid India of British rule—we had reasons for doing so—but that is no reason why we should get rid of the English language. We know fully well the good and the evil that English education has done to us. But let us judge the future use of English dispassionately and from the point of view of our country's needs. After all, it is on account of that language that we have been able to achieve many things; apart from the role that English has played in unifying India politically, and thus in our attaining political freedom it opened to us the civilisation of large

parts of the world. It opened to us knowledge, specially in the realm of science and technology, which it would have been difficult to achieve otherwise. Today we are proud of what our scientists and our technical experts have done."

These are not my words; these are the words of Dr. Shyama Prasad Mookerji on this article of the Constitution, article 343, which is the subject matter of discussion.

Let me remind, English language is not inconsistent with our national character. Rabindranath Tagore wrote his *Geetanjali* for which he was given the Nobel Prize, in the English language.

**SHRI N. S. SHARMA :** No; translated.

**SHRI AMIYANATH BOSE :** *Geetanjali* in Bengali is not the *Geetanjali* in English. The *Geetanjali* that was presented for the Nobel Prize is a collection of poems of Tagore which he wrote in the English language.

**SHRI N. S. SHARMA :** It is wrong; it was a translation of the Bengali. (*Interruption*)

**SHRI S. N. BANERJEE :** He wrote it in Bengali.

श्री मधु लिमये : इस प्रकार की कविता अंग्रेजी में लिखी ही नहीं जा सकती ।

**SHRI AMIYANATH BOSE :** It was translated by Tagore himself.

**MR. DEPUTY-SPEAKER :** You must remember the original inspiration. Let us remember, he was honoured as a poet in Bengali which was more important.

**SHRI S. M. BANERJEE :** He was given the Nobel Prize because he was the greatest poet of Bengal.

**SHRI AMIYANATH BOSE :** The *Essays on the Bhagwad Gita*, written by Aurobindo Ghose was in the English language. The original draft of the Quit India Resolution by Mahatma Gandhi was in the English language and it was translated into Hindi.

**SHRI S. M. JOSHI (Poona) :** The Congress was started by an Englishman !

**SHRI AMIYANATH BOSE :** The first proclamation of the provisional Government of Azad Hind, the first free Government of India, was written by Netaji Subhas Chandra Bose in the English language.... I know, Subhas Chandra Bose in 1938 as the President of the Congress suggested before the Haripura Congress that Hindustani in Roman script.... (Interruption)

**श्री मधु लिमये :** वह ठीक है। अंग्रेजी तो नहीं न? हिन्दुस्तानी ठीक है। नेताजी को और महात्मा जी को काहे को बदनाम कर रहे हैं? वह बड़े लोग थे, ऊंचे लोग थे।

**SHRI S. M. BANERJEE :** He is misquoting everyone including in uncle.

**SHRI AMIYANATH BOSE :** I know, Subhas Chandra Bose in 1938 as the President of the Congress suggested before the Haripura Congress that Hindustani in Roman script should be the *lingua franca* of India, but you by your attitude are making Hindi or Hindustani unpopular throughout the country

Therefore, I say—mark my words—win over the people of India to Hindustani by love. We know, the people of India will take to Hindustani only as a result of historical growth. Win them over, not by coercion because you cannot win them that way. We, Bengalis and Madrasis, can fight you also.... (Interruptions).

**SHRI N. S. SHARMA :** Talk of Bengali then, not of English.

**SHRI NAMBIAR (Terucherappalli)** We are ready for the fight.

**MR. DEPUTY-SPEAKER :** The hon. Member should try to conclude.

**SHRI AMIYANATH BOSE :** You know, Sir, my speech has been punctuated—I will not use a stronger expression—with interruptions. I like interruptions. As a lawyer practising in court, I often face interruptions from the court, but not shouts and abuses. I say, I left Congress in 1947 because Congress betrayed India in accepting the partition of India. I left Congress with my father and a few others because Congress committed treachery. Since 1947, this is perhaps the first time that I am supporting what has been proposed to this

House by the Congress Government. I am supporting it because this is, at least, a compromise which is acceptable to the people. I say, let us today take the resolve, not by burning posters in the streets of Delhi, not by burning buses in Lucknow, Allahabad, Banaras and other places.....

**AN HON. MEMBER :** What happens in Calcutta ?

**SHRI NAMBIAR :** That is different.

**SHRI AMIYANATH BOSE :** I do not agree with Mr. Nambiar's politics. But I at least say, neither the Communist Party (Marxist) nor the Communist Party of India have taken anything but a reasonable attitude towards this language question. (Interruption)

**MR. DEPUTY-SPEAKER :** May I request the hon. Member to ignore the interruptions and address the Chair ?

**SHRI AMIYANATH BOSE :** To conclude, I say, so far as we are concerned, so far as the people of Bengal are concerned, we maintain that English must be preserved as the link language till everybody voluntarily accepts Hindustani as the link language. (Interruption) I know some people have become nationalists after 1947. I have been a nationalist since my childhood.... (Interruption)

**श्री मधु लिमये :** 1947 तक !

**SHRI AMIYANATH BOSE :** My friend has become overnight a patriot after 1947 when the British have left, because of the fight of the Azad Hind Fauj. Therefore, I say, the three-language policy must be pursued sincerely, energetically, so that all over India people learn not only English but two other languages also. English is necessary to maintain the high standard of scientific, technical and medical education; English is necessary to maintain the legal fabric of this country.... (Interruption) I at least can speak very bad Hindi but I challenge my friend on the other side to speak in this House in the language of Tagore. The day he does that, I shall agree to learn Hindi.... (Interruption) I say, this is not a matter of passion. This is a matter which has to be dealt with very dispassionately. The feelings of every section of the Indian people, the feelings of



[Shri Amiyanath Bose]  
every State, must be considered. There must be national consensus, to borrow an expression of our Home Minister. I extend my support to the Bill and the Resolution moved by Shri Y. B. Chavan with the qualifications I have stated.

श्री मधु लिमये : उपाध्यक्ष महोदय, कल यहां पर आरोप किया गया कि किसी मद्रासी स्कूल पर हमला किया गया है . . .

SHRI ANBAZHAGAN (Tiruchengode) : There are so many.

श्री मधु लिमये : इस तरह की बात यहां पर कही गई है। अगर यह सही बात है, तो बहुत खराब चीज है। मैं चाहता हूँ कि मंत्री महोदय इसका खुलासा करें।

MR. DEPUTY-SPEAKER : The Home Minister was present yesterday and I had asked the Home Minister to take note of it.

श्री मधु लिमये : गृह मंत्री जी यहां पर हैं, वह इसका जवाब दें।

SHRI ANBAZHAGAN : May I submit to the Deputy-Speaker that an Adjournment Motion has been given in the name of the Members from Madras State as well as some Independent Members on the incidents that have taken place in Delhi and it is under the consideration of our Speaker.

MR. DEPUTY-SPEAKER : Yes; I also remember, the Speaker observed before the House was adjourned for lunch today that he was considering it and that he would certainly provide some time for discussing incidents in Delhi.

श्री मधु लिमये : अगर उनको खुलासा करना है तो करें . . .

MR. DEPUTY-SPEAKER : I am sorry. I now stand corrected. The position is that the Speaker has directed the Home Minister to make a statement.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : उपाध्यक्ष महोदय, मुझे इसके सम्बन्ध में एक बात कहनी है। . . .

SHRI K. LAKKAPPA (Tumkur) : There were attempts to stop the train, Southern Express... (Interruption) The South Indians cannot travel now. There is a lot of obstruction there. Who is responsible for that ? (Interruptions)

MR. DEPUTY-SPEAKER : As I said, the Speaker has informed the House that he has directed the Home Minister to make a statement. Let us wait till Monday.

SHRI NAMBIAR : Till Monday, can the trains be stopped ? The trains must go to Madras and also come from Madras. We want this hooliganism to be ended. Or, we will mend it.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : उपाध्यक्ष महोदय, मेरा कहना यह है कि कल कुछ ऐसी बातें कही गई हैं . . .

MR. DEPUTY-SPEAKER : If there is urgency, whatever information is available I will ask... (Interruptions)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : उपाध्यक्ष महोदय, आप मेरी बात सुनिये। मुझे यह कहना है कि स्पीकर साहब ने कहा है कि सोमवार को गृह मंत्री जी वक्तव्य दें। लेकिन मैं अपने मित्रों से सहमत हूँ कि सोमवार को देर होगी। कल सदन में जो बातें कही गई हैं, मैंने उनके बारे में पता लगाने का प्रयत्न किया है, उनमें से कुछ बातें गलत हैं। वे बातें अंग्रेजी की न्यूज़ एजेन्सियों ने, अंग्रेजी के समाचार पत्रों ने सारे देश में फैलाई हैं और उनकी प्रतिश्रिया हो सकती है। इस लिये जो बातें गलत हैं, उनके बारे में गृह मंत्री जी को मौका दीजिये कि वे उनका खण्डन करें। क्योंकि अगर हम देश में वातावरण को सुधारना चाहते हैं तो गलत बातों का प्रचार होना ठीक नहीं है। कल कहा गया है कि मैसूर के तीन एम० एल० ए० आये थे . . .

SHRI ANBAZHAGAN : Three MLAs of Madras were attacked at Agra.

SHRI S. K. SAMBANDHAN (Tiruttani) : He has no right to say that what was said yesterday was wrong.

**SHRI ANBAZHAGAN :** He has no authority to speak on those incidents. The Madras MLAs were attacked.

**SHRI S. K. SAMBANDHAN :** He has no right to say that what was said here yesterday was wrong unless it was investigated by the Government.

**MR. DEPUTY-SPEAKER :** Let Mr. Vajpayee finish. Then I will give an opportunity to his Leader also.

**श्री अटल बिहारी बाजपेयी (बलराम-पुर) :** उपाध्यक्ष महोदय, जब यह बात यहां पर कही गई, तो स्वाभाविक है कि हमको यह बात बुरी लगी कि कोई मद्रास के एम० एल० ए० दिल्ली आयें या आगरा आयें और उन पर हमला किया जाय। हम इसकी निन्दा करते हैं। हम इस बात को बिल्कुल पसन्द नहीं करते हैं और जो लोग ऐसे काम कर रहे हैं, उनके साथ हमारी कोई सहानुभूति नहीं है। लेकिन तय्यों को सामने रखना होगा। मैंने आज आगरा से सम्पर्क किया है—आगरा में क्या हुआ है, गृह मंत्री इसके सम्बन्ध में अपनी जानकारी दें। जहां तक मुझे मालूम हुआ है—मद्रास के एम० एल० ए० कार में बैठ कर आगरा में घूम रहे थे—वहां पर विद्यार्थियों का आन्दोलन चल रहा है—उसको कोई गलत समझे या सही, यह दूसरी बात है। वहां पर कारों की प्लेटों को जो अंग्रेजी में होती हैं, उनको पोता जा रहा है। उनकी कार के अंग्रेजी नम्बर को पोतने के ऊपर उस कार में बैठे हुए लोगों के साथ कुछ विवाद हुआ। लेकिन जब विद्यार्थियों को पता लगा कि वे मद्रास के एम० एल० ए० थे, तो विद्यार्थियों ने उनसे माफ़ी मांगी। क्या वह एम० एल० ए० इस बात से इंकार कर सकते हैं कि विद्यार्थियों ने नहीं किया... (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय, अब जहां तक दिल्ली की बात है दिल्ली में किसी स्कूल पर हमला हुआ या नहीं हुआ इस बात की जांच की जानी चाहिए। अगर हमला हुआ है तो हम उसकी निन्दा करेंगे लेकिन कुछ घटनाओं को लेकर अगर सारे देश में प्रतिक्रिया पैदा करने का प्रयत्न किया जायगा तो वह ठीक नहीं होगा।

**MR. DEPUTY-SPEAKER :** Mr. Anbazhagan, you want to say some thing ?

**SHRI ANBAZHAGAN :** Yes, Sir.

Yesterday, the Deputy leader of the DMK raised the issue that some sort of an attack is going on against the South Indians here. Also, as those people who are representatives from the Assembly of Madras who have come here were attacked when they went to Agra. These are all things for which the Madras Government itself may raise the issue with the Central Government in due course. They are Assembly Members and this is a very serious thing.

Sir, the whole movement—the anti-English Movement—is causing such a havoc in this country and especially to those people who do not know Hindi and especially the MPs. here. We do not know Hindi. We are not bound to learn Hindi. There is no necessity for us, the Tamil people or the Bengali people, to learn Hindi. We may respect the Hindi people. We may respect their language. We may respect their culture. But, in no way can we accept Hindi as superior to our language, our culture or our civilization.

And we, because we have not learnt Hindi and our sign-boards are not in Hindi and because in the cars or taxis that we engage the numbers as well as the letters are not in Hindi, we are attacked. Sir, such hooliganism is to be condemned by all sections of this House. I want the Government to take notice of this issue and the serious repercussions that may occur in future.

**SHRI RANGA (Srikakulam) :** Mr. Deputy-Speaker, Sir. It is all right. I accept what my hon'ble friend Shri Vajpayee has said just now that they have nothing to do with these incidents, and that he deplors them. But I think it is the duty of all of us and, more especially, of our friends who have taken special interest in seeing that Hindi is accepted by the whole of India and by this Government and by this Parliament, to so conduct themselves here and set an example to the people outside and also appeal to the people outside to

[Shri Ranga] \*

see that such incidents as we have been experiencing during the past four or five days all over northern India, are not indulged in, that they do deplore these things and that they want a calm, cool and wise consideration to be given to this very vital matter. Till now I have not seen any such appeal and I do hope all our friends who are interested in Hindi hasten to make such an appeal and also use their influence as individuals, as statesmen and as leaders of parties to see that this kind of atmosphere is not combined. Otherwise, what is likely to happen I am sure, Sir, they are experienced enough to know and realise, because, after all the whole of India is not Hindi-speaking and quite a large portion of India and its population are non-Hindi-speaking. They are watching what is happening. They are not any less excitable than the Hindi-speaking people, nor are they less enthusiastic about their own languages and their link language, if our Hindi friends are not prepared to accept English. For them, any how, English has served, Sir, as the link language and they are just as passionate about it as a medium of communication amongst themselves, and between themselves and the Hindi-speaking people as our Hindi people are. Therefore, it is just as well for them to try to assert and recover their own balance of mind and their own wisdom. I do not mean to say that they do not have it, but it is possible for everybody to lose it for a while; they might have lost it for a few days, but let them recover whatever wisdom they are capable of commanding and set an example to their own people and to the rest of the people also by their own behaviour here, by showing tolerance towards so many of us who believe in English as being the best possible link language and also to the people outside who are not able to reconcile themselves to their idea that Hindi alone should be the link language. It will take some time when possibly India may make up her mind in a calmer manner and in a less controversial fashion on some link language; what it is we cannot say now. So many of us want English. My hon. friend here was saying the other day 'Oh, it is a slavish mind which wants English'. I would say that according to me, English has become as much a national language as any one of the other languages. (Interrupt-

tions) am entitled not only to have my opinion but also to have my feelings about it, just as my hon. friends are. I want Hindi too. I have no objection. I have had no objection to Hindi. Indeed, when Babu was alive, we were all wanting to develop Hindi as our national language. But today I find that we have turned it into a political weapon, a political argument and a political instrument with the result that it has now become more an apple of discord than a symbol of unity. Therefore, I make an appeal to my friends to bear with us just as we are prepared to bear with them.

SOME HON. MEMBERS rose—

MR. DEPUTY-SPEAKER : No, we shall put an end to it. Let us put an end to this controversy.

SHRI SAMAR GUHA rose—

SHRI S. XAVIER (Tirunelveli) : I am not going to say anything controversial. Kindly allow me just one minute....

MR. DEPUTY-SPEAKER : Now, Shri Prakash Vir Shastri.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री (हापुड़) : मेरा निवेदन केवल इतना है कि इस प्रकार की घटनाएँ जो हमारे कानों में पड़ रही हैं, हमें यत्न करना चाहिए कि किसी प्रकार से इन घटनाओं में वृद्धि न हो। कल की घटना है कि मेरे पास जिस समय यह सूचना आई कि हाडिंग ब्रिज के पास में जो तेलगू भाषा भाषियों का हायर सैकेंडरी स्कूल है वहाँ किसी प्रकार की घटना हुई, मैं स्वयं उस स्थान पर पहुँचा केवल इस बात को देखने के लिए कि उस घटना में कितनी वास्तविकता है। मुझे हर्ष के साथ आपको यह सूचना देनी है कि केवल वह सूचना वातावरण को बिगाड़ने की दृष्टि से थी। वास्तविकता उसके अन्दर कुछ नहीं थी। मैं अपने मित्र श्री अटल बिहारी वाजपेयी से इस विषय में सोलहों आने महमत हूँ कि गृह-मंत्री जी को इस विषय में सख्ती से निर्णय लेना चाहिए। किसी भी दक्षिण भारतीय भाषा के स्कूल पर व्यक्ति पर या किसी प्रकार के संगठन पर भी हो। यह सही है कि हमारा

संघर्ष अंग्रेजी के खिलाफ है, भारतीय भाषाओं के खिलाफ हमारा संघर्ष नहीं है और इसी दृष्टि से मैं कहना चाहता हूँ कि कहीं कोई इस प्रकार की घटना हो तो तत्काल उसको दबाया जाना चाहिए और उसमें सख्ती से पेश आना चाहिए।

लेकिन साथ ही साथ जो बात मैं आपको कहना चाहता हूँ और गृह मंत्रालय को कहना चाहता हूँ वह यह है कि 1965 की तरह अंग्रेजी के जिन अखबारों ने अंग्रेजी की समाचार एजेंसियों ने जैसे वातावरण को उस समय बिगाड़ा था, कहीं ऐसा न हो कि वातावरण को बिगाड़ने के लिए इस प्रकार की घटना को अतिरंजित करके पेश किया जा रहा हो इसलिए उसकी तह में भी ज़रूर पहुँचना चाहिए।

MR. DEPUTY-SPEAKER : Now, let us close this chapter. The hon. Minister.

SHRI SAMAR GUHA (Contai) : I would just take only one minute. The situation is very serious....

डा० महाशय प्रताप (बांसगांव) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं व्यवस्था का प्रश्न उठाना चाहता हूँ। एक विवाद उठा और होम मिनिस्टर क्लैरिफ़ाई करने के लिए खड़े भी हुए लेकिन आपने उनको बैठने के लिए कह दिया और विवाद बढ़ता चला जा रहा है।

MR. DEPUTY-SPEAKER : Let him not please bring in other things. First I looked towards the Minister to find out whether he had any information; at that time, he did not respond. Therefore, I looked at the other side. Now, the hon. Member may resume his seat.

SHRI SAMAR GUHA : Really, I echo your voice when you say that you want to close the chapter. Therefore, I would request all my friends who are advancing Hindi almost like fanatics inside the House and outside to take a lesson....(Interruptions) This is a very serious thing. They must take a lesson from this; if they are going to create a situation inside the House and out-

side then it will have its consequences; they have created an inflammable situation; we are getting letters from the non-Hindi-speaking States; we are getting telephonic calls from Bengal and we are getting letters from Bengal in regard to this. As for the situation in UP, I could understand it. But now, if in Delhi, in the capital city, under the very nose of the Home Minister, they are just going to create a bedlam of the Hindi fanatics, I want to warn, through you, those Hindi fanatics who think that patriotism is their monopoly, who think that Hindi is the symbol of patriotism, who think that to be a votary of Hindi is to be equated with patriotism, that they must take the warning that if they want to create a situation that will pave the way for the disintegration of India, they are playing with fire. If the image of United India, which is in the heart of all, is to be preserved and protected, then they must behave in this House calmly, with dignity and with a sense and a spirit of national emotional integration.

One word more. You said that the Home Minister would make a statement on Monday. The situation may not wait for you. The possibility and danger of serious repercussions is there in other States also. Therefore, the urgency of the situation demands that the Home Minister make his statement today.

SOME HON. MEMBERS rose—

MR. DEPUTY-SPEAKER : Shri Nambiar.

श्री य० द० शर्मा : (अमृतसर) : माननीय सदस्य ने अभी धमकियाँ दी हैं। उनको धमकियाँ नहीं देनी चाहिये थीं।

श्री मधु लिमये : मैं गृह मंत्री से स्पष्टीकरण चाहता हूँ। वह मैंने उनसे मांगा है।

श्री कंबर लाल गुप्त (दिल्ली सदर) : यह दिल्ली का मामला है और मुझे आप बोलने ही नहीं दे रहे हैं।

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA) : May I say a few words ?

MR. DEPUTY-SPEAKER : If he is ready, I will call him.

**SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA :** I got up earlier also.

**MR. DEPUTY-SPEAKER :** I will call him in a moment. Shri Nambiar.

**SHRI NAMBIAR :** I would not incite, I would not inflame. I accept the sentiments expressed by Shri Prakash Vir Shastri. But the fact is that he has got a wrong report. In my house, there are two children, a girl and a boy, who are studying in the Madras school. They were beaten. The girl wept. She was left out. The boy was also beaten. They boy told me this. Let him come with me and find out for himself. I am his neighbour. I am in 17 Windsor Place and he is in 1, Canning Lane. What I have said is a fact. Truth is truth. I can prove it to him.

**SHRI S. A. DANGE (Bombay Central South):** The worsening of the situation has to be prevented. Everybody is agreed on that. Shri Vajpayee says he regrets these incidents. What is required is the prevention of these incidents, not expression of regrets after the event. He is not responsible. I am not holding anybody responsible. At the same time, the sentiments on the other side have got to be taken note of, whatever may be our views about it.

My suggestion is this—it may not be accepted, but I want to make it. Can we all parties meet unofficially, if not officially, in the Central Hall and issue a joint appeal with no reservations? Not even the Hindi protagonists should have any reservations about us. Let us say that we may fight out this controversy in any other way, but not this way.

**SHRI. S. K. TAPURIAH (Pali) :** For once I agree with Shri Dange.

**SHRI S. A. DANGE :** The procedural experts may say whether, Parliament itself can pass an emergency resolution on this question of amicable and peaceful relations on this controversy.

**THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND COMMUNICATIONS (DR. RAM SUBHAG SINGH) :** I categorically deprecate all the acts of vandalism that may have occurred anywhere in the name of language or in any other name. It should be within the competence

of each and every citizen of our country to go anywhere unhampered or unhindered. The name plates today, as you now, are mostly in English, so they must not be removed by anybody.

As to what the leader of the Communist Party says, we are prepared, because a joint appeal must go to everybody (*interruptions*) The ruling party is here, but the acts of vandalism which are quoted here have happened where other parties are also ruling.

**श्री कंबर लाल गुप्त :** मैं प्रोटेस्ट करता हूँ। हमको आप आज्ञा नहीं देते। आप हमें जवाब देने नहीं देते हैं। मैं जो यह कह रहे हैं इसके खिलाफ जबर्दस्त प्रोटेस्ट करता हूँ। राम सुभग सिंह जी ने जो कहा है उसके खिलाफ मैं स्ट्रांगली प्रोटेस्ट करता हूँ (इंटर-प्रांज) दिल्ली का मामला है। वह हमें एक्यूज कर रहे हैं उधर से और ये इधर से। हमें आप बोलने नहीं देते हैं।

**DR. RAM SUBHAG SINGH :** The leader of DMK says that he is having a separate culture. I am prepared to adopt his culture. In my opinion, Indian culture is a composite one; it may be in Madras or Kashmir, we are having the same culture. Even if there is a little difference, we at least are prepared to adopt his culture, and also study all the languages of India.

On behalf of the Congress Party, I give you the fullest assurance that we will do all that is humanly possible to prevent these incidents.

**SHRI P. RAMAMURTI (Madurai) :** I have a suggestion. Today language is not the problem. We have got to see that these small, little kids who are today roaming about, whose feelings have been roused unfortunately....

**AN HON. MEMBER :** By whom?

**SHRI P. RAMAMURTI :** By whom is not the problem. The problem is to see that these feelings are assuaged. A mere appeal by all of us from the Central Hall may not reach those boys. Therefore, my humble request to the Congress, and the Prime Minister personally, is that immediately a huge meeting should be organised in Delhi, where all parties, people belonging

to all parties, make a fervent appeal to the boys in Delhi to rise above this parochialism. This problem can be solved by discussion, but let not feelings be roused against South Indians or by the South Indians against North Indians. Let us put an end to it. Therefore, I make a humble appeal that the time has come when all parties must sink their differences on this question by rising to the occasion and make a big appeal to the citizens of Delhi, particularly to the students. Otherwise, things will go out of our hands. Mere written appeals will not do.

**श्रीमती लक्ष्मीकान्तम्मा (खम्मम) :** उपाध्यक्ष महोदय, जघर से आप लोगों को बुलाते जाते हैं। हमें आप बुलाते नहीं हैं? हमारी माननीय सदस्या श्रीमती मुशीला रोहतगी के मकान पर अटक हुआ...

**MR. DEPUTY-SPEAKER :** Why do you want to repeat it. We have read it in the papers.

**श्री कंवर लाल गुप्त :** उपाध्यक्ष महोदय, मुझे आप एक मिनट दें, मैं खुद जा कर आया हूँ।

**श्री अटल बिहारी बाजपेयी :** इनकी बात भी सुन लीजिये, ये घूम कर आए हैं।

**श्री कंवर लाल गुप्त :** कल जब श्री मनोहरन ने सदन में यह बात कही कि कुछ रीडिंग रोड के ऊपर और राजज ऐवैन्यू पर जहां नांन हिन्दी वालों के स्कूल हैं वहां कुछ शीशे बगीरह तोड़े गए हैं, बच्चों को पीटा गया है, स्कूल में डिसटर्बेंस किया गया है तो मैं वहां गया। यह भी कहा गया था कि कुछ हिन्दी बोलने वाले लोग वहां पर गए और नांन-हिन्दी वाले जो बच्चे थे उन पर अटक उन्होंने किया और उनको चोटें पहुंचाईं। उपाध्यक्ष महोदय, हमको बहुत दुख हुआ और मैं स्वयं कल शाम को वहां गया स्कूलों में, राजज ऐवैन्यू में भी गया, रीडिंग रोड के बंगाली स्कूल पर भी गया, बटलर स्कूल पर गया और मैं पुलिस स्टेशन पर भी गया। एस० पी० से मैंने बात की। पुलिस के सब से बड़े अधिकारी से बात करने के बाद जो स्थिति सामने आई है वह जिस तरह से

यहां पर कलर दिया जा रहा है, वैसी पोलीशन वहां नहीं थी। पोलीशन यह थी कि डी० ए० वी० के बच्चों को ले कर के आसपास के स्कूलों के बच्चे गए। यह ठीक है कि ग्लास बगीरह भी तोड़े। लेकिन डी० ए० वी० स्कूल के भी शीशे तोड़े हैं, बंगाली स्कूल के भी टूटे हैं, बटलर स्कूल के भी टूटे हैं...

**DR. SUSHILA NAYAR (Jhansi) :** He is not running the Government here; he is not the Government; let the Government say what has happened.

**श्री कंवर लाल गुप्त :** उसमें किसी भी हिन्दी या गैर-हिन्दी का भेदभाव नहीं था। और आपको यह सुन कर आश्चर्य होगा कि एक स्कूल के बच्चे निकल कर दूसरे में गए। यहां तक कि बंगाली स्कूल के बच्चे भी उसमें शामिल हुए स्कूल बन्द कराने के लिए। अध्यक्ष महोदय, मेरा कहने का मतलब इतना ही है...

**SHRI M. L. SONDHI (New Delhi) :** Outside there is 144; inside also 144 ?

**SEVERAL HON. MEMBERS rose—**

**MR. DEPUTY-SPEAKER :** If every Member from the Delhi constituencies is going to speak, it is not possible. Shri Gupta has spoken and made some suggestions. Please conclude.

**श्री कंवर लाल गुप्त :** मैं खत्म कर रहा हूँ। मतलब इसको हम भ्रच्छा नहीं समझते। यह चीज नहीं होनी चाहिए। लेकिन इसको यह कलर देना कि यह हिन्दी और गैर-हिन्दी का झगड़ा है यह बात नहीं है। मैं यह कहना चाहता हूँ अपनी तरफ से और अपनी पार्टी की तरफ से खास कर के कि जहां तक हिन्दी का प्रश्न है किसी भी गैर-हिन्दी व्यक्ति को अगर यहां कुछ हुआ तो वह देश के विरोध में होगा। ऐसा करने वाला देश के प्रति गद्दार होगा और सब से पहले हमारे ऊपर चोट लगेगी। गैर-हिन्दी वालों को पहले यहां रहने दिया जायेगा, हम बाद में रहेंगे। इस तरह की बात दिल्ली के अंदर नहीं हो सकती। कोई करेगा तो मैं और मेरी पार्टी उसका डट कर मुकाबिला करेगी।

MR. DEPUTY-SPEAKER : The Home Minister.

SHRI M. L. SONDHI : I crave your indulgence, Sir.

MR. DEPUTY-SPEAKER : I am not permitting. I will appeal to you. Please resume your seat.

SHRI M. L. SONDHI : This is a game of maligning the Jan Sangh Government. It is wrong. I just now have returned from the Madras School where I addressed the students. They listened to me and I was able to assure them, and they accepted my advice. Shri Shukla should thank us for this. Otherwise, playing one party against the other, by the Congress, would create a vicious situation. It is wrong to blame the Jan Sangh. (Interruption)

MR. DEPUTY-SPEAKER : The Minister. I have called him more than once.

SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA : Immediately after this question was raised in the House yesterday, we got into touch with the Delhi Administration and called for a full report about the alleged incident. We got a small bit of report yesterday and almost a full report today morning. It was stated that some students who were on strike went out of their schools and colleges and went round to several other schools and colleges, trying to make the students in those colleges and schools come out on strike. Wherever there was some resistance, they were shouting—slogan-shouting—and in a few stray cases there was stone-pelting. Apart from this, no other incident of any kind happened in which any non-Hindi speaking person was beaten or assaulted. (Interruption) No such incident has happened where any non-Hindi school has been attacked or any assault has been done; some stray incidents have happened. The police took very prompt action and precautionary measures have also been taken to see that such incidents do not take place. As far as the students are concerned, I must say that it is only a very small section of students who are indulging in hooliganism. By and large, a large section of Delhi students have maintained calm and discipline. It is not as if the whole student population or a majority of them are indulging in this kind

of thing. About those who are doing this, we are taking necessary action to see that they do not succeed in disturbing the peace of those people who have not come out in strike.

SHRI K. LAKKAPPA : What about the attempt to stop the Southern Express ?

MR. DEPUTY-SPEAKER : Mr. Lakkappa, please resume your seat now. (Interruptions). Nothing will go on record now. (Interruptions)\*\*

MR. DEPUTY-SPEAKER : Seth Govind Das.

SHRI ANBAZHAGAN : The children of Mr. Mayavan, an hon. member of this House, were beaten. (Interruptions).

MR. DEPUTY-SPEAKER : If certain incidents are there, certainly the Home Minister will welcome information and I can say this much that he would also investigate about the truth of those incidents. When all of us are concerned, let that concern be reflected in our speeches here. All the shouting and counter-shouting is reported outside. We should make a really serious effort to restrain ourselves. You can argue your point of view but we should remember that language is a sensitive element in our society. Therefore, I would appeal to every member who participates in this debate. The Minister of Parliamentary Affairs has endorsed Comrade Dange's suggestion. The members will have to be restrained. If anyone indulges in any shouting or counter-shouting, rousing passion, passion will be reflected outside. (Interruptions). Seth Govind Das.

डा० गोविन्द दास (जबलपुर) : उपाध्यक्ष जी, आप इस बात को मानते हैं कि यहाँ पर जो हल्ला-गुल्ला हुआ है उसमें मैंने कोई भाग नहीं लिया। मैं चुपचाप बैठा हुआ सारी बातें सुनता रहा हूँ...

SHRI SAMAR GUHA : On a point of order, Sir. Mr. Lakkappa asked a categorical question that there has been disturbance in the Southern Express. He wanted to know what protection has been provided by the Government so that there may not be any difficulty with regard to the Southern Express. He should reply to that question.

\*\*Not recorded.

**SHRI NAMBIAR :** He wants the Southern Express to be started.

**डा० गोविन्द दास :** उपाध्यक्ष जी, मैं कह रहा था कि हम इस तरह से बर्ताव करेंगे तो कोई भी काम हो नहीं पायेगा . . .

**SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA :** I can say that we shall not allow anybody to stop the Southern Express from proceeding from New Delhi. (Interruptions).

15 hrs.

**MR. DEPUTY-SPEAKER :** Dr. Govind Das—

**श्री क० ना० तिवारी (बैतिया) :** उपाध्यक्ष महोदय, मेरा प्वाइन्ट आफ़ आर्डर है। अग्नेण्डमेन्ट का टाइम बढ़ा दिया जाय, हम लोग इस पर अग्नेण्डमेन्ट देना चाहते हैं।

**MR. DEPUTY-SPEAKER :** On that point the Speaker has given a ruling this morning. He will fix the time. I am not concerned with it.

**THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND COMMUNICATIONS (DR. RAM SUBHAG SINGH) :** You may request the Speaker . . .

**MR. DEPUTY-SPEAKER :** It is for you to request him. There is no point of order.

**डा० गोविन्द दास :** उपाध्यक्ष महोदय, इस बात को सारा सदन जानता है कि मैंने इस सारे हल्ले-गुल्ले में, एक शब्द भी नहीं कहा है और मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि अगर हम को प्रजातन्त्र चलाना है तो जिस तरह आज कल यहाँ हल्ला-गुल्ला, शोरगुल होता है, उससे हमारा प्रजातन्त्र आज नहीं तो कल और कल नहीं तो परसों असफल हो जावेगा। इस लिये यहाँ पर हमको बड़ी शान्ति से काम लेना चाहिये।

जहाँ तक दिल्ली और भारतवर्ष के अन्य स्थानों की घटनाओं का सम्बन्ध है, मैं श्री अटल बिहारी वाजपेयी, श्री कंवरलाल गुप्ता और श्री प्रकाशवीर शास्त्री से बिल्कुल सहमत हूँ कि इस तरह की घटनायें यदि किसी के

द्वारा भी की जायें, चाहे वह हिन्दी भाषा-भाषी हो, हिन्दी का समर्थन करने वाला हो या किसी अन्य भाषा का, तो उन सब का विरोध करना, उन सब को लानत भेजना, यहाँ के तमाम नागरिकों का कर्त्तव्य होना चाहिये।

मैं सारी उम्र गांधी जी के साथ रहा हूँ, उनके चरणों में बैठ कर जो थोड़ी-बहुत सेवा मुझ से हो सकी है, मैंने की है, इस लिये किसी भी हिंसात्मक कांड से चाहे वह मनसा-वाचा-कर्मा किसी प्रकार का हिंसात्मक काण्ड हो, मेरी कोई सहानुभूति नहीं हो सकती।

अपना भाषण आरम्भ करने से पहले, मेरे पूर्व जो हमारे सुभाषबाबू के कुल के एक बंगाली सदस्य ने कहा, उनसे मैं कहना चाहता हूँ कि सारे भारत में, इस देश में एक राष्ट्र की आवश्यकता है—यह बात किसने कही थी? यह बात सब से पहले आधुनिक बंगाल के पहले नेता राजा राम मोहन राय ने कही थी—एक बंगाली ने कही थी . . .

**श्री सत्तर गुह :** राजा राम मोहन राय ही अंग्रेजी को लाये थे—गलत बात नहीं कहनी चाहिये।

**डा० गोविन्द दास :** उस समय राजा साहब ने ब्रह्म समाज की स्थापना की थी। केशवचन्द्र सेन ब्रह्म समाज के उनके बाद के नेता हुए, उन्होंने भी इसी बात को दोहराया। उस समय भारतीय साहित्य के सूर्य थे—बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय—वह भी बंगाल के थे। उन्होंने भी वही बात कही, जो राजा साहब ने कही थी। शारदा चरण मित्र भी बंगाली थे, उन्होंने एक पत्र निकाला, जिसका नाम देवनागर रखा गया, उस पत्र में सारे भारतीय साहित्य को देवनागरी वर्णमाला में प्रकाशित किया जाता था। अभी हम लोगों ने संसदीय हिन्दी परिषद् की ओर से उस पत्र को फिर प्रकाशित किया है। नेता जी सुभाष चन्द्र बोस के सम्बन्ध में कहा गया, मुझे खेद है कि इस वक्त उनका उद्धरण मेरे पास नहीं है कि नेता जी सुभाष चन्द्र बोस ने हिन्दी के सम्बन्ध में क्या



[श्री० गोविन्द दास]

कहा था परन्तु उन्होंने भी हिन्दी का समर्थन किया था। तो सबसे पहले इस देश में एक राष्ट्र-भाषा की आवश्यकता है, इस बात को बंगाल से कहा गया। बंगाल उस समय सारे देश का नेतृत्व करता था, बंगाल के बाद नेतृत्व गया महाराष्ट्र में—लोक मान्य तिलक ने भी वही बात कही...

**श्री समर गुह :** आप नेता जी की बात कैसे कहते हैं। हिन्दी के साथ हम भी हैं, नेताजी हैं, सब हैं, लेकिन ये हिन्दी के दुश्मन हैं। अंग्रेजी के खिलाफ उन्होंने कभी नहीं कहा है।

**श्री० गोविन्द दास :** महाराष्ट्र के बाद नेतृत्व गया गुजरात में। स्वामी दयानन्द सरस्वती और महात्मा गांधी ने क्या कहा—आप सब जानते हैं। तो हिन्दी को स्वतन्त्रता के पहले राष्ट्र भाषा का जो पद मिला, वह पद किसी हिन्दी भाषी के प्रयत्न से नहीं मिला, वह अहिन्दी भाषी लोगों के प्रयत्न से मिला।

आज मैं इस विधेयक का विरोध करने को खड़ा हुआ हूँ। इसमें कई सुधार हो रहे हैं, लेकिन इस विधेयक के सम्बन्ध में मेरा यह मत है कि गधे को घोने से वह घोड़ा नहीं हो सकता। चाहे कितना ही सुधार इसमें किया जाय, यह विधेयक आखिर में अंग्रेजी के समर्थन का ही विधेयक रहेगा। अंग्रेजी के सम्बन्ध में इस विधेयक में जो कुछ कहा गया है, मेरा यह अन्दाज है कि इस विधेयक के अनुसार अगर काम चला तो इस देश में सदा संवदा के लिये अंग्रेजी ही चलेगी।

हम ने संविधान सभा में हिन्दी को राजभाषा बना दिया था, 15 वर्ष के अन्दर हिन्दी राज-भाषा का स्थान ले लेगी, यह हमने निर्णय किया था। 15 वर्षों तक सरकार ने इस सम्बन्ध में क्या किया, वह हमारे सामने है। मैं प्रति वर्ष या तो शिक्षा अनुदान के ऊपर या वित्त विधेयक के ऊपर या गृह मंत्रालय के ऊपर कहता रहा हूँ, सहजता रहा हूँ कि सरकार जिस तरह

हिन्दी का काम कर रही है, उस प्रकार यदि हिन्दी का काम किया गया तो हिन्दी कभी आने वाली नहीं है। इस विधेयक के पास हो जाने के बाद यही बात होने वाली है। इस लिये बड़े खेद से, मुझे जो एक अलंकार मिला था—पद्मभूषण का, उसे भी मुझे कल रात सरकार को वापस करना पड़ा। मुझे उसे वापस करते हुए खेद हुआ। वह पद्मभूषण अलंकार मुझे मिला था, मेरी थोड़ी-बहुत राष्ट्रीय सेवाओं के फल स्वरूप, मेरी भाषा की सेवाओं के फल स्वरूप। मेरा यह विश्वास है कि जो कुछ हो रहा है और जो कुछ सरकार करने वाली है, उससे अंग्रेजी ही पनपेगी और अंग्रेजी का इस देश में पनपना, जिसे 175 वर्षों के अंग्रेजी राज्य के बाद भी दो प्रतिशत लोग भी नहीं समझते—एक अराष्ट्रीय बात है, देश के हित की चीज नहीं है।

कहा जाता है कि पं० जवाहर लाल नेहरू के आश्वासन के आधार पर यह विधेयक लाया जा रहा है। मैं एक छोटा-सा साहित्यकार हूँ, नाटककार भी हूँ और नाटक का मनोविज्ञान से बड़ा गहरा सम्बन्ध है... (व्यवधान)... मनोवैज्ञानिक दृष्टि से व्यक्ति के जो मत आरम्भ में होते हैं, वे ही सही मत होते हैं, बाद में जो कुछ भी वह कहता है, वह दूसरे प्रभावों से कहता है। जिस समय संविधान सभा चल रही थी उस समय हमारे मित्र अन्धोनी साहब ने और दूसरे कुछ लोगों ने चाहा कि हमारे संविधान में अंग्रेजी को उसके शेड्यूल में एक भाषा के रूप में रखा जाय। मैं पढ़ कर सुनाना चाहता हूँ कि पंडित जी ने उसके सम्बन्ध में क्या कहा था—

"There is an insidious move on the part of some to include English as one of the languages of the Eighth Schedule. This is obviously a wrong thing to do, as English is not an Indian language. Though it is acquired and owned as mother tongue by some Indians like the Anglo-Indian community, it should be enough if we recognise the need to learn English or modern European languages. It would be absurd, therefore, and un-

warranted too, to include English as an Indian language in the Schedule. This move to include English is to by-pass the basic principles of the replacement of English by India's national language. It will be wholly in contravention of the spirit and contents of the Constitution and the modern history of our people during the last half century."

जिस एंग्लो इंडियन समाज के सम्बन्ध में उन्होंने कहा उसके नेता श्री फ्रैंक एन्थोनी, उसी जबलपुर नगर से आते हैं जिस जबलपुर नगर से मैं आता हूँ। हम दोनों एक ही नगर से हैं। वह मुझे हिन्दी फ़ैनेटिक कहा करते हैं और मैं उन्हें अंग्रेज़ी फ़ैनेटिक कहा करता हूँ। यदि हिन्दी का समर्थन करने वाले हिन्दी फ़ैनेटिक कहे जाते हैं तो जो अंग्रेज़ी के समर्थक हैं वह अंग्रेज़ी फ़ैनेटिक हैं। जब एन्थोनी साहब ने स्वयं क्या कहा था वह भी मैं आप को बतलाना चाहता हूँ। एन्थोनी साहब ने सन् 1949 में कहा था :

"I realise that English cannot, for many reasons, be the national language of this country."

उपाध्यक्ष महोदय, जवाहरलाल जी इतने बड़े प्रजातंत्रवादी थे कि वह कभी यह बात नहीं कह सकते थे कि इस देश का यदि एक राज्य भी वह चाहे कि अंग्रेज़ी चलती रहे तो अंग्रेज़ी चलती रहे। फिर अगर उन्होंने ऐसी कोई बात कही है तो वह संविधान के विरुद्ध है, पंडित जी की मेरे मन में इज्जत जितने यहां लोग हैं उनसे शायद अधिक ही होगी कम नहीं होगी, लेकिन मैं यह कहे वगैर नहीं रह सकता कि संविधान के विरुद्ध पंडित जी ने यदि कोई आश्वासन दिया है तो संविधान पंडित जी से बहुत बड़ी चीज़ है। हम लोग जो संविधान के प्रति वफ़ादार रहने की अपेक्षा लेते हैं उनका यह कर्तव्य हो जाता है, चाहे वह पंडित जी का आश्वासन हो, पंडित जी के ऐसे आश्वासन को हमें तोड़ देना चाहिए। फिर पंडित जी के आश्वासनों की इतनी बातें कही जाती हैं तो महात्मा गांधी का इस बारे में क्या कहना था उसको भी तो हमें देखना होगा . . .

SHR SEZHIYAN (Kumbakonam) : You can amend the Constitution.

डा० गोविन्द दास : जी हां, वह ठीक होगा कि संविधान में संशोधन कर दिया जाय। मैं ने जिस दिन यह बिल यहां पर रक्खा गया था कहा था कि अगर आपको यही सब करना है तो ईमानदारी के साथ कीजिये, संविधान में परिवर्तन कर दीजिये मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी। लेकिन जब तक संविधान जैसे का वैसा रहता है तब तक मैं कहना चाहता हूँ कि यह विधेयक संविधान के विरुद्ध है। इतना ही नहीं कहूंगा, मैं आगे कहूंगा कि अगर यह विधेयक यहां पर स्वीकृत हो जाता है तो मेरे सदृश व्यक्तियों का, कम-से-कम मेरा यह कर्तव्य होगा कि इस मामले को मैं सुप्रीम कोर्ट में ले जाऊं, हाईकोर्ट में ले जाऊं कि यह संविधान के विरुद्ध है . . .

श्री कंबर लाल गुप्त : कांग्रेस से त्यागपत्र भी दे दीजिये।

डा० गोविन्द दास : पंडित जी के आश्वासनों के सम्बन्ध में बहुत कुछ कहा गया है, लेकिन पंडित जी से जो बहुत बड़े गांधी जी थे, उनको हम बिल्कुल भूल गये। उनकी शिक्षाओं का हमें स्मरण नहीं है। अब आप देखिये कि गांधी जी ने सन् १९१८ में क्या कहा था। देश का नेतृत्व उनके हाथ में आ रहा था। गांधी जी ने कहा था :

"यह भाषा का विषय बड़ा भारी और बड़ा ही महत्वपूर्ण है। यदि सब नेता सब काम छोड़ कर केवल इसी विषय पर लगे रहे तो बस है। यदि हम लोग भाषा के प्रश्न को गौण समझें, या उधर से मन हटा लेंगे, तो इस समय लोगों में जो प्रवृत्ति चल रही है, लोगों के हृदयों में जो भाव उत्पन्न हो रहा है, वह निष्फल हो जायेगा। भाषा माता के समान है। माता पर जो प्रेम होना चाहिए, वह हम लोगों में नहीं है।—हम अंग्रेज़ी के मोह में फंसे हैं। हमारी प्रजा अज्ञान में डूबी है। हमें ऐसा उद्योग करना चाहिए कि एक वर्ष में राजकीय सभाओं में, कांग्रेस में, प्रान्तीय सभाओं में

[डा० गोविन्द दास]

और अन्य सभा-समाज और सम्मेलनों में अंग्रेजी का एक भी शब्द सुनाई न पड़े। हम अंग्रेजी का व्यवहार बिल्कुल त्याग दें।”

उसके बाद मैं एक बात और कहूंगा कि यह प्रश्न केवल हिन्दी का प्रश्न नहीं है। यह एक गलत बात कही जाती है कि हिन्दी वाले यह चाहते हैं या वह चाहते हैं। हिन्दी की निस्वत मैं कुछ नहीं कहना चाहता। मैं तो केवल यह कहना चाहता हूँ कि एक तरफ हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाएँ हैं और दूसरी तरफ अंग्रेजी है। झगड़ा हिन्दी और भारतीय भाषाओं के बीच का नहीं है, बल्कि झगड़ा है हिन्दी, भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी का। यह झगड़ा क्यों हो रहा है? यह झगड़ा जिसको कि अंग्रेजी में लोक्स एंड फिशिंग कहते हैं, उसके कारण है। यह झगड़ा कोई सिद्धान्त के कारण नहीं है। लोगों को यह भय है कि हिन्दी भाषा भाषी बहुमत में हैं इसलिए यदि हिन्दी अपने उचित स्थान पर रहे तो लोगों को नौकरियाँ नहीं मिलेंगी। मैं हिन्दी भाषा-भाषियों का कृपापात्र हूँ। मैं उनसे स्नेह रखता हूँ। मैं उनकी तरफ से कहना चाहता हूँ कि हम इस बात के लिए तैयार हैं कि या तो आबादी के अनुपात से आप नौकरियों के स्थान निश्चित कर दें या हिन्दी भाषा-भाषी यह त्याग करने के लिए भी तैयार हो जायेंगे कि अगले 10 वर्ष या 20 वर्ष तक केन्द्रीय सरकार की नौकरियों में उन्हें कोई जगह न दी जाय और सब नौकरियाँ अहिन्दी भाषा भाषियों को दे दी जायं। दरअसल यह जो झगड़ा है, वह इसलिए है।

हमारी जितनी भाषाएँ हैं, चाहे वह उत्तर की भाषा हो या दक्षिण की भाषा हो, एक ही संस्कृति की भाषा है, एक ही आचार की भाषाएँ हैं। उत्तर की भाषाएँ, संस्कृत से निकली हैं, लेकिन दक्षिण की भाषाओं को अगर आप देखें तो आप उनमें भी काफ़ी प्रतिशत संस्कृत के शब्द पायेंगे। गांधीजी ने इस सम्बन्ध में जो कहा था उसे आप देखें :

अंग्रेजी को प्रान्तीय भाषाओं का या हिन्दी का स्थान नहीं देना चाहिए। अगर अंग्रेजी ने यहां लोगों की भाषाओं को निकाल न दिया होता, तो प्रान्तीय भाषाएँ आज आश्चर्यजनक रूप में समृद्ध होतीं। अगर इंग्लैंड फ्रेंच भाषा को अपने राष्ट्रीय काम-काज की भाषा मान लेता, तो आज हमें अंग्रेजी का साहित्य इतना समृद्ध न मिलता। नामन विजय के बाद वहाँ फ्रेंच भाषा का ही जोर था, लेकिन उसके बाद लोक-प्रवाह विशुद्ध अंग्रेजी के पक्ष में हो गया। अंग्रेजी साहित्य को आज हम जिस महान् रूप में देखते हैं, वह उसी का फल है।

इसलिए उपाध्यक्ष महोदय, मैं यह कहना चाहता हूँ कि भाषा के सम्बन्ध में झगड़ा अंग्रेजी हिन्दी का नहीं है। एक तरफ हिन्दी व अन्य प्रान्तीय भाषाएँ हैं और दूसरी तरफ अंग्रेजी है।

हमारे लिए स्वतंत्रता सब से बड़ी चीज है। स्वाधीनता के लिए हम लड़े थे। गुलामों की न कोई भाषा होती है, न कोई संस्कृति होती है, न कोई सभ्यता होती है और न ही कोई धर्म होता है। इसलिए स्वराज्य, स्वतंत्रता हमारे लिए सब से बड़ी वस्तु है। अब स्वतंत्रता के सम्बन्ध में राष्ट्रपिता ने क्या कहा था वह भी आप समझ लीजिये :

“अगर स्वराज्य अंग्रेजी बोलने वाले भारतीयों का और उन्हीं के लिए होने वाला हो, तो निस्सन्देह अंग्रेजी ही राष्ट्रभाषा होगी लेकिन अगर स्वराज्य करोड़ों भूखे मरने वालों, करोड़ों निरक्षरों, निरक्षर बहनों और दलित व अन्त्यजों का हो और उन सब के लिए होने वाला हो, तो हिन्दी ही एकमात्र राष्ट्रभाषा हो सकती है।”

स्वराज्य के बाद हमारे देश में तीन बातें सब से आवश्यक हैं। पहली बात है एकता, दूसरी बात है देश की समाजवादी रचना और तीसरी बात है देश का आर्थिक विकास, जो कि वज्ञानिक प्रगति पर अवलम्बित है। एकता के सम्बन्ध में भी राष्ट्रपिता क्या कहते हैं वह आप देखिये।

“यह बात नहीं कि मैं भाषा के पीछे दीवाना हो गया हूँ।—फिर भी मैं भाषा पर इतना जोर इसलिए देता हूँ कि राष्ट्रीय एकता हासिल करने का यह एक बहुत जबरदस्त साधन है और जितना दृढ़ इसका आधार होगा, उतनी ही प्रशस्त हमारी एकता होगी।”

समाजवाद की रचना अंग्रेजी से कैसे होगी यह मेरी समझ में नहीं आता। समाजवादी रचना में समूचे समाज को भाग लेना होगा। समूचा समाज जिसमें केवल 2 प्रतिशत लोग अंग्रेजी जानते हैं वह अंग्रेजी के द्वारा समाजवाद की स्थापना कैसे करेंगे यह मेरी समझ के बाहर है। जहाँ तक वैज्ञानिक प्रगति की बात का सवाल है, इस सम्बन्ध में मैं डा० कोठारी का मत आपके सामने रखना चाहता हूँ। उन्होंने कहा था :

“The immense practical advantage of acquiring knowledge..... in one's own language (mother tongue) cannot be gain-said. It is difficult to guess and remember technical terms if these are in a 'foreign language'. It would result in parrot-like learning, mental strain and the stifling of intelligence.

Basic concepts of science often have their root in primitive experience. One's initiation into science would not be 'natural' and the grasp and understanding would suffer in vitality and breadth, if one used one term to describe a concept inside the science class-room and another term for it outside the class-room.

If the scientific terminology was foreign to the language of daily use, those not specialising in science would find it difficult to remember anything of science which they read at school, and retain interest in science.

The training of skilled workmen, craftsmen and tradesmen can be most easily carried out in the language of the region concerned.

A large-scale 'popularisation of science' can be achieved only if done in the regional language.”

मैं हमारे शिक्षा मन्त्री श्री त्रिगुण सेन को इस बात के लिए धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने निर्णय कर लिया और अभी जो शिक्षा आयोग का प्रतिवेदन यहां स्वीकृत किया गया उस में भी स्पष्ट हो गया कि अब हमारी शिक्षा का माध्यम हमारी भारतीय भाषाएं होंगी। लेकिन मैं त्रिगुण सेन जी से आपकी मार्फत कहना चाहता हूँ कि यह कोई नई नीति नहीं है। जब श्रीमाली जी शिक्षा मन्त्री थे तब उन्होंने भी यह बात कही थी। मुझे इस बात का भय है कि डा० त्रिगुण सेन के जो मातहत लोग हैं वे कहां तक उनके आश्वासन को कार्यरूप में परिणत करेंगे। अगर वे कार्यरूप में परिणत हो जाएं तो बहुत से हमारे प्रश्न हल हो जाते हैं। वैज्ञानिक शिक्षा के सम्बन्ध में भी राष्ट्र पिता के वचन आप सुन लें। उनका कहना था :

“यह कभी नहीं हो सकता कि हजारों लोग अंग्रेजी भाषा को अपना माध्यम बनायें और यह अगर मुम्किन हो, तो भी चाहें लयक तो कतई नहीं। इसकी सीधी सादी वजह यह है कि अंग्रेजी के जरिये मिलने वाला उच्च और पारिभाषिक ज्ञान, ग्राम लोगों तक नहीं पहुंच सकता। यह तो तभी हो सकता है कि जब इस ज्ञान का प्रसार, ऊपर वालों में भी किसी देशी भाषा के द्वारा हो।”

मुझे पूर्ण विश्वास है कि त्रिगुण सेन जी ने जो कुछ कहा है उसको वह कार्यरूप में परिणत करेंगे।

अब मैं अंग्रेजों के दो उदाहरण पढ़ कर सुनाना चाहूंगा। आयरलैंड के विख्यात कवि, थामस डेविस कहते हैं।

“A nation without a mother-tongue cannot be called a nation. The defence of one's mother-tongue is more essential than the defence of the boundaries of one's motherland, because the mother-tongue is a more powerful barrier to the intrusion of foreigners than even the natural barriers of rivers and mountains.”

[ डा० गोविन्द दास ]

अंग्रेजी के एक और प्रसिद्ध विद्वान हमारी भाषाओं के सम्बन्ध में क्या कहते हैं इसको भी देख लें। हमारे यहां तो यह कहा जाता है कि हमारी भाषा सक्षम नहीं है लेकिन एक अंग्रेजी लेखक कहता है कि यह गलत है। हम कहें कि हमारी भाषाएं सूक्ष्म नहीं हैं तो यह हमारे लिए लज्जा की बात होनी चाहिये। प्रमुख विद्वान श्री श्रुस्ट कहते हैं :

“Indian vernaculars are magnificent vehicles of speech and capable of expressing any human conception and being the vehicle of the highest scientific education.”

केवल हिन्दी ही नहीं समस्त भाषाओं के सम्बन्ध में उनका यह कहना है।

अब मैं क्योंकि कांग्रेस दल का हूं इसलिए कांग्रेस दल के सदस्यों को कहना चाहता हूं कि भाषा के सम्बन्ध में कांग्रेस की नीति बहुत स्पष्ट है। 1949 में कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने कहा था :

“It is the considered policy of the Congress, which has been adopted in the Constitution of India, that Hindi, as the national language of the country, should be encouraged and at the same time the great Provincial languages should also be encouraged in their respective areas and should normally be the medium of work in those areas.”

कांग्रेस का पूरा अधिवेशन जोकि 1958 में गोहाटी में हुआ था उस में एक प्रस्ताव पास किया गया था जिस में कहा गया था :

“.....there should be a strong link between these languages. Such a link cannot be a foreign language, however important this may be. It can only be an Indian language.”

आज कांग्रेस का नेतृत्व जो कुछ कहता है वह महत्व का है या कांग्रेस ने स्वयं अपने प्रस्तावों में जो कुछ कहा है वह महत्व का है। मैं कांग्रेस के संसद सदस्यों से कहना चाहता हूं कि किसी दबाव में या किसी झगड़े में न पड़कर इस विषयक को वे पूर्ण विरोध करें,

इसके पक्ष में मत न दें और मेरा स्पष्ट मत है कि इस विषयक में कोई सुधार सम्भव नहीं है।

अब आप इस विषयक की कुछ धाराओं को लें। सर्वप्रथम यह किसी भी राज्य को वीटो का अधिकार देता है। जब दिल्ली प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन का एक शिष्ट मंडल हमारे प्रधान मन्त्री से मिला था तब उन्होंने स्पष्ट कहा था कि इस प्रकार का अधिकार किसी एक राज्य को नहीं रहेगा। प्रजातन्त्र में इस प्रकार का अधिकार किसी एक राज्य को दिए जाने का क्या अर्थ है। इसका अर्थ तो यह है कि नागालैंड के सदृश कुछ लाख की आबादी वाला राज्य भी हम पर अंग्रेजी लादे रख सकेगा। कहा जाता है कि हिन्दी लादी जा रही है। जो कुछ हो रहा है उस में मैं समझता हूं कि हिन्दी तो क्या लादी जा रही है, अंग्रेजी लादी जा रही है।

दूसरी बात यह है कि चह्माण साहब के संकल्प में यह कहा गया है कि “संघ सेवाओं अथवा पदों के लिए भरती करने के हेतु उम्मीदवारों के चयन के समय हिन्दी का ज्ञान अनिवार्यतः अपेक्षित नहीं होगा।” या तो यह निकाल दीजिये या फिर इसको रखना चाहते हैं तो फिर उसी के साथ आप अंग्रेजी भी जोड़िये।

एक बात मैं और कहूंगा कि हम को इस देश का जनमत जानना है तो गोआ के सम्बन्ध में यदि हम जनमत ले सकते हैं तो इस विषयक के सम्बन्ध में हम जनमत क्यों नहीं ले सकते। विषयक को आप प्रसारित कर दें जनमत के लिए। मैंने इसके बारे में संशोधन भी भेजा है। दो मार्च तक आप लोगों की राय लेने के लिए इसको प्रसारित कर दें। पर इस से भी ठीक बात यह होती कि इस विषयक पर आप देश का जनमत उसी प्रकार ले लें जिस तरह का जनमत आपने गोआ के सम्बन्ध में लिया था।

ये कुछ बातें थीं जो विषयक के सम्बन्ध में मैं आप से कहना चाहता था। मैं अन्त में कहूंगा

कि भाषा का प्रश्न मानव जीवन में सब से महत्वपूर्ण प्रश्न है। मानव सृष्टि कः सर्व श्रेष्ठ प्राणी इसलिए है कि जो ज्ञान शक्ति निःसर्ग ने मानव को दी है वह किसी अन्य प्राणी को नहीं दी। इस ज्ञान शक्ति का आचार भाषा है। अन्य कोई प्राणी मानव के सदृश नहीं बोलता। इसलिए भाषा का प्रश्न अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रश्न है। हिन्दी ही इस देश की राष्ट्र भाषा नहीं है। मैंने, जब मैं हिन्दी साहित्य सम्मेलन का 1948 में अध्यक्ष था उस वक्त भी कहा था और अब भी कहता हूँ कि हमारे संविधान में जितनी भाषायें रखी गई हैं वे सब हमारी राष्ट्र भाषायें हैं। क्षेत्र अलग अलग हो सकते हैं। केन्द्र का काम हिन्दी में चले, लिंक लैंग्वेज, सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी चले और प्रान्तों का कार्य अपनी-अपनी भाषाओं में हो।

जो बातें मैंने कही हैं मैं आशा करता हूँ कि संसद के सभी सदस्य उन पर संयम के साथ विचार करेंगे और इस विधेयक का विरोध कर इसको पारित नहीं होने देंगे।

**उपाध्यक्ष महोदय :** श्री शास्त्री जी।

**श्री प्रकाशवीर शास्त्री :** उपाध्यक्ष महोदय, यह जो विधेयक और यह जो संकल्प है.....

**उपाध्यक्ष महोदय :** माननीय सदस्य अग्रली बार अपना भाषण जारी रखें।

**SHRI S. C. JAMIR (Nagaland) :** Sir, I would like to make a small clarification. Nagaland Government has decided to have English as the official language for obvious reasons. One thing is : Nagaland has joined the Indian Union officially only in 1961. During all these years the medium of instruction for our boys was English. We have just started learning Hindi. Though we do not hate any other language, for our own convenience we have decided to adopt English as our official language. It does not mean that we are opposed to Hindi. Our boys are learning Hindi. But if you want to impose Hindi on Nagaland, it will

be just like asking a boy of five to run a hundred yards race with a fifty-year old man.

I would like to appeal to all the Members to consider that it is in the fitness of things that Nagaland has decided to adopt English as its official language. We do not have any prejudice against any language.

**MR. DEPUTY-SPEAKER :** Shrimati Sucheta Kripalani and Shri Thirumala Rao have tabled two amendments to the resolution, namely amendments Nos. 62 and 63. We shall take them as moved.

**SHRI SEZHIYAN :** They are not here to move it. Notice may be waived but they must be here to move it personally. Otherwise, those amendments cannot be taken into account.

**MR. DEPUTY-SPEAKER :** When they were handed over to me, I could see that Shrimati Sucheta Kripalani was here. But I did not want to interrupt the hon. Member who was speaking. Technically, what Shri Sezhiyan says is right. But I had seen Shrimati Sucheta Kripalani when the thing was handed over to me. But I did not want to interrupt the hon. Member who was speaking.

**SHRI SEZHIYAN :** We have no objection to your waiving notice. But they must be here to move it.

**MR. DEPUTY-SPEAKER :** The amendments were handed over when the hon. Mover was here, and then they came to me.

**SHRI SEZHIYAN :** It is not the procedure of this House.

**SHRI ANBAZHAGAN :** It is not the procedure of this House to have an amendment moved in that manner. The Mover ought to be here to move it.

**MR. DEPUTY-SPEAKER :** What happened was that I did not want to interrupt the Member who was speaking.

**SHRI NAMBIAR :** You are setting up a wrong precedent.

**MR. DEPUTY-SPEAKER :** Now, Shrimati Sucheta Kripalani is here. She might formally move them.

SHRIMATI SUCHETA KRIPALANI : I beg to move :

"That in the resolution, in part 2 of para 1, for "an annual report" substitute "an annual assessment report". (62)

That in the resolution, in para 4, for

"And, whereas it is necessary so ensure that the just claims and interests of persons belonging to non-Hindi-speaking areas in regard to the public services of the Union are fully safeguarded;

This House resolves—

(a) that compulsory knowledge of Hindi shall not be required at the stage of selection of candidates for recruitment to the Union services or posts excepting any special services/posts for which a high standard of Hindi knowledge may be considered essential for the satisfactory performance of the duties of the service or post."

substitute :

"And, whereas it is necessary to ensure that the just claims and interests of people belonging to different parts of the country in regard to the public services of the Union are fully safeguarded;

This House resolves—

(a) that compulsory knowledge of either Hindi or English shall be required at the stage of selection of candidates for recruitment to the Union services or posts except in respect of any special services or posts for which a high standard of knowledge of English alone or Hindi alone, or both, as the case may be, is considered essential for the satisfactory performance of the duties of any such service or post". (63)

DR. SUSHILA NAYAR : I want to move an amendment to the amendment.

MR. DEPUTY-SPEAKER : But is it ready ?

DR. SUSHILA NAYAR : Yes, it is ready. I beg to move :

That in the amendment moved by Shrimati Sucheta Kripalani, printed as S. No. 63 in List No. 12 of Amendments,—

for "that compulsory knowledge of either Hindi or English shall be required"

Substitute :—

"that compulsory knowledge of either Hindi or English shall not be required" (64).

This is a very simple amendment. Instead of the words "compulsory knowledge of either Hindi or English shall be required" I want to substitute the words 'compulsory knowledge of either Hindi or English shall not be required.'

MR. DEPUTY-SPEAKER : Has the amendment been numbered ?

DR. SUSHILA NAYAR : I do not know the number. But is an one-line amendment.

MR. DEPUTY-SPEAKER : It is a one-word amendment. Is it necessary to clarify it ?

The amendment is as follows .

Amendment moved :—

That in the amendment moved by Shrimati Sucheta Kripalani, printed as S. No. 63 in List No. 12 of Amendments,—

for "that compulsory knowledge of either Hindi or English shall be required"

Substitute :—

"that compulsory knowledge of either Hindi or English shall not be required" (64).

SHRI NAMBIAR : Is it necessary for the amendment to have a number ?

MR. DEPUTY-SPEAKER : Yes, it will be numbered later on.

15-33 hrs.

COMMITTEE ON PRIVATE MEMBERS' BILLS AND RESOLUTIONS  
SIXTEENTH REPORT

श्री ग० च० दीक्षित (खंडवा) : श्रीमान, मैं प्रस्ताव करता हूँ कि :

"यह सभा गैर-सरकारी सदस्यों के विषयकों तथा संकल्पों संबंधी समिति के 16वें प्रति-